Impact Factor-8.632 (SJIF)

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March-24

(CDLXX) 470

किन्नर विमर्श

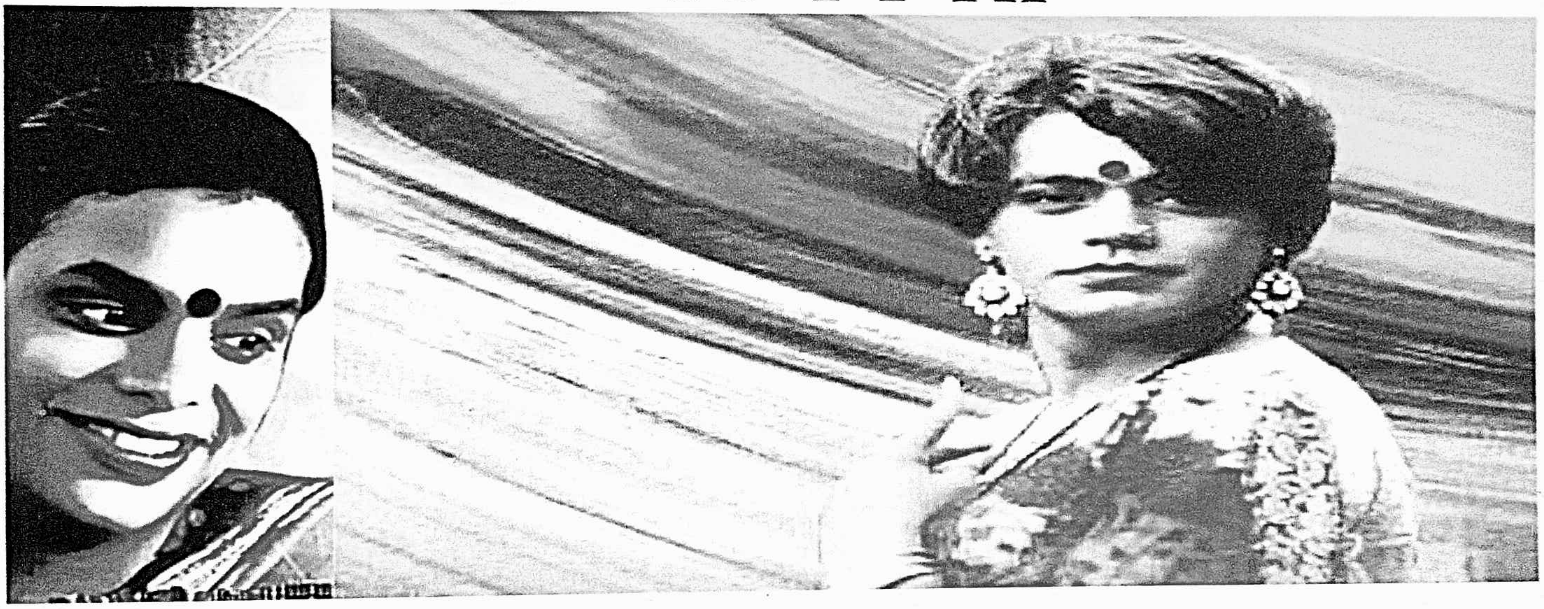

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

This Journal is indexed in :

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Aadhar Publications

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDLXX) 470
ISSN : 2278-9308 March, 2024

Impact Factor – (SJIF) –8.632 ISSN – 2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2024

ISSUE No- (CDLXX) 470

किन्नर विमर्श

Chief Editor
Prof. Virag.S.Gawande
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Editor
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science Parbhani, Dist.- Parbhani,

Aadhar International Publication
For Details Visit To : www.aadharsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDLXX) 470
ISSN : 2278-9308 March , 2024

INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	हिंदी उपन्यासो में किन्नर विमर्श	प्रा. डॉ. मोहन मुंजाभाऊ डमरे	1
2	किन्नर कथा' उपन्यास में सामाजिक स्थिति एवं मान्यताएं	प्रो. डॉ.अनिता नेरे , रघुनाथ विठ्ठल मोरे	4
3	किन्नरो की पुकार – हम भी मानव है	डॉ.सुभाष जाधव	8
4	हिंदी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श	डॉ.व्यंकट अमृतराव खंदकुरे	13
5	' यमदीप ' किन्नरों के अस्मिता की पहचान करानेवाला प्रतिनिधिक उपन्यास ।	प्रा.डॉ. पी .एम.भुमरे	17
6	कौन तार से बीनी चदरिया कहानी और किन्नर विमर्श	प्रा.डॉ.पवन नागनाथ एमेकर	22
7	समकालीन उपन्यास में किन्नर विमर्श	डॉ. वसंत पुंजाजीराव गाडे	25
8	भारतीय साहित्य में किन्नर विमर्श एक दृष्टि	डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ	30
9	हिंदी कहानियों में किन्नर विमर्श	डॉ. दत्ता शिवराम साकोले	34
10	किन्नरों का सामाजिक अस्तित्व और समकालिन हिंदी उपन्यास	डॉ. पद्मानंद पिराजीराव सोनकांबळे	37
11	संघर्षशील जीवन की यथार्थ गाथा : 'आगे ना पीछे'	डॉ. नागराज उत्तमराव मुळे	39
12	किन्नर विमर्श अवधारणा और भारतीय समाज	प्रा. विठ्ठल केशवराव टेकाले	41
13	हिन्दी कहानी और किन्नर विमर्श	प्रा.डॉ.मारोती उत्तमराव खेडेकर	44
14	किन्नर विमर्श एवं वर्तमान सद्स्थिति	केंद्रे डी. बी.	47
15	हिंदी उपन्यास और किन्नर विमर्श	प्रा. डॉ. महावीर रामजी हाके	49
16	समकालीन हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	कोतवाल मजहर मकबूल	52
17	'हिजड़ो' को आत्मनिर्भर बनाता – 'नाला सोपारा उपन्यास'	प्रो. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद	55
18	समकालीन हिंदी साहित्य में किन्नर	प्रा. डॉ. अरुण नागोराव मुंडे	58
19	हिंदी उपन्यास साहित्य में किन्नर विमर्श	प्रा. डॉ. राम दगडू खलंग्रे	61
20	नीरजा माधव कृत 'यमदीप' उपन्यास में तृतीयपंथी जीवन	विजयकुमार प्रल्हादराव वाघमारे	66
21	हिंदी कहानियों में चित्रित किन्नर विमर्श	प्रा.डॉ. शिवहार भुजंगराव साळुंके	70

B.Aadhar' International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CDLXX) 470
ISSN : 2278-9308
March , 2024

'हिजड़ो' को आत्मनिर्भर बनाता – 'नाला सोपारा उपन्यास'

प्रो. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
हिन्दी विभाग प्रमुख हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय, हिमायतनगर नांदेड –४५१८०२
मो ९४०४६३९७८५

हमारे समाज के हाशिये पर एक तीसरा समाज है, जिसे हम किन्नर समाज कहते है। यह किन्नर समाज हमारे साहित्य में एक विमर्श का विषय बन चुका है। आज हर साहित्यिक चर्चाएँ, संगोष्ठीयों में किन्नरों पर बहस हो रही है। उसी इन्हें अछूत मानकर सार्वजनिक स्थानों पर हिजड़ा कहकर अपमानित किया जाता था। उन्हें गालिया दी जाती थी, अब भी कहीं–कही यह सब होता है। परंतु भारत सरकार के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री.के. एस राधाकृष्णन ने 'नॅशनल लीगल सर्विस अथॉरिटी' द्वारा निर्णय देते हुए कहा कि, "हमे तृतीय लिंगी लोगों के बारे में अपनी मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है। उनकी संख्या को देखते हुए उन्हें प्रत्येक मानवीय अधिकारों का प्रयोग करने की आजादी है। समाज में उनके प्रति मानवीय दृष्टिकोण का विकसित होना जरूरी है।' यह निर्णय उन्होंने अप्रैल २०१४ में सूनाया जिसके तहत "तृतीय लिंगी समाज को भारतीय संविधान के भाग–३ तथा भारत की सांसद तथा राज्यों की विधानसभाओं में पारित नियमों तहत सूरक्षा के अधिकार दिए जाने, जरूरी है। दूसरा तृतीय लिंगी लोगों को यह स्वतंत्रता दी जाये कि स्त्री या पुरुष के रूप में जैसा वे चाहें उन्हें जाना जाये, भारत तथा राज्य सरकार को निर्देषित किया जाता है कि वे उनके चयन को कानूनी मान्यता दें।" इस निर्णय ने किन्नर समाज को जीने का आधार तो दिया लेकिन समाज में उनके प्रति नो उपेक्षा और घृणा का भाव है, उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन अब भी नहीं आया। इतना जरूर हुआ की डिन्नरों पर बहस हुई, चर्चाएँ चली और वह सार्थक भी हुई जिसने हिंदी लेखन को प्रभावित किया।

हिंदी में लिखे गये महत्वपूर्ण उपन्यासों में नीरजा माधव का 'यमदीप' महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा,' निर्मला भुराडिया का 'गुलाम मंडी' तथा चित्रा मुद्गल का 'पोस्ट बॉक्स नं.२०३ नाला सोपारा' आदि प्रमुख है। इसी बीच लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी की आत्मकथा 'मै हिजडा– मैं लक्ष्मी!" आयी, जिसमें उनके संघर्ष के विविध सोपानों को जिस प्रकार बयान किया गया है, उससे इस सामाजिक व्यवस्था के प्रति घृणाहोती है। हमारी संस्कृति पर जो हमें गर्व है, उसके प्रति मन में धिक्कार की भावना उत्पन्न होती है।

चित्रा मुदगल का 'पोस्ट बाक्स नं. २०३ नालासोपारा' उपन्यास मुंबई के एक खाते–पीते परिवार के बच्चे विनोदकी कहानी है, जो जन्म से ही जननांग की विकृति का शिकार है। उससे बड़ा भाई सामान्य है, और उसके बाद जो एक और भाई है वह भी सामान्य ही है। विनोद के पिता किराने की दूकान चलाते है और माँ वंदना विनोद के शारीरिक विकृति के कारण ही उसके प्रति कुछ अधिक मोहविष्ट है। कुस बड़ा होने पर विनोद को बच्चों के साथ खेलने पर अपनी शारीरिक विकलांगता का बोध होता है और खेलने खेलकर लौटने के बाद माँ से पूछता है– 'मेरे नुन्नू क्यों नहीं हैं बा?' यही सवाल संपूर्ण उपन्यास का केंद्रिय सवाल है जो दिनोद उर्फ बिन्नी उर्फ विमली के माध्यम से इस उपन्यास के साथ ही पूरी सामाजिक संरचना के आगे अपने भयावह आकार में खड़ा होकर बढ़ता जाता है।

बिन्नी पढ़ने में एक मेधावी छात्र है। माँ–बाप उसे अनेक विशेषज्ञ डाक्टरों को दिखाते है पर लाभ नहीं होता है। और विनोद अपनी शारीरिक विकृति के साथ ही बड़ा होता जाता है। किशोरावस्था तक उसमें लड़कियों वाले हावभाव भी प्रकट होने लगते है। और एक दिन चंपाबाई आकर हंगामा खड़ा करती है और बिन्नी पर अपने समुदाय का हक जताती है। यह परिवार के लिए एक बड़ा सदमा होता है। सामाजिक बदनामी से बचने के लिए बिन्नी को अंतत: चंपाबाई को सौंप दिया जाता है। माँ–बाप को संबोधित अपने पत्रों की शृंखला वाले किसी पत्र में जिसके सहारे ही उपन्यास का कथानक बुना गया है। माँ की इस विवशता को वह कसाई के हाथ सौंपी गई बछिया की तरह बताकर छिटकन और अलगाव की अपनी आंतरिक

पीड़ा को ही व्यक्त करता है।

हिजडों पर लिखे उपन्यासों से यह उपन्यास इस मायने में अलग है कि यह उपन्यास दूसरे उपन्यासों की जैसे हिजड़ो के अल्प ज्ञात जीवन के छिपे पहलुओं का रोचक वृतांत पेष न करके मानवतावादी दृष्टिकोण से हिजडे होने की पीड़ा को हमारे समक्ष रखता है। इस उपन्यास के नायक विनोद दूसरे हिजडों की तरह अपने कश्टों और तकलिफों रोना होकर समाज में ये दया–अनुकंपा की याचना नहीं करता। विनोद न सिर्फ अपने पैरों पर खड़ा होता है, बल्कि वह राजनीति द्वारा उपलब्ध कराये गये अवसर का लाभ उठाकर अपनी हिजड़ा बिरादरी को भी ओढ़ी गयी नियति से मुक्त की सलाह देता है। उपन्यास दूसरों की दया– अनुकंपा की जगह मेहनत की रोटी खाने, और स्वाभिमान से बिमली बना दिया देता है। विनोद से बिमली बना दिया गया बिन्नी हिजड़ा डेरे पर रहते हुए भी फरीदाबाद की उमंग सोसाइटी में सुबह–सुबह गाडियाँ धोने का काम करता है। आगे चलकर वह स्थानीय विधायक की मदत से कंप्युटर संचालन का कोर्स र्स करके विधायक जी के यहां नौकरी करने लगता है। बिन्नी हिजड़ा होते हुए भी अपने अंदर के स्वाभिमान को ठेस पहुंचने नहीं देता, वह यह बिल्कूल सहन नहीं,कर सकता कि दूसरे लोग इसके हिजड़ा होने पर दया करे। उसे गुस्सा आता पर अपनी हिजडा बिरादरी पर कि उसने मानसिक अनुकूलन को ही अपनी नियति क्यों मान रखा है। मुख्यधारा के समाज ने हिजड़ों को जिलाए रखने की हमेशा से ही कोशिश की है। वह यह मानता है कि जननांग विकलांगता नहीं है कि बहुत दोष है किंतु की यह कोई ऐसी विकलांगता नही है कि अपनी मेहनत की रोटी इज्जत से न कमाई जा सके–"अपने श्रम पर जिओ। मनोरंजन की दक्षिणा पर नही। हिकारत की दक्षिणा जहर है, जहर। तुम्हें मारने का जहर। तुम्हे समाज से बाहर करने जहर।"[१]

वह चाहता है कि अपने प्रयासों से अपने पैरो पर खड़ा होने में सफल हुआ है, वैसे उसका हिजड़ा समाज भी पर निर्भरता की दुनिया से बाहर निकलकर अपने हाथ–पैर और दिल–दिमाग का यथोचित इस्तेमाल करके सम्मानजनक जिवन वितार सर्वच को बदले। उसका कहना है कि हिजड़ा लोग अपनी क्षमुलाओं को पहचाने कि वे किसी से कम नही। अपनी बा को लिखे पत्र में वह कहता है कि, "समूचे हाथ–पैर, दिल–दिमाग वाले तम्मा–तडंग कलंक क्यों है कि कलाई घर लें तो वह उनसे छूटपाने से रहा। ऐसी दुर्दम्य षक्ति, वीर्य वमन से वंचितों के भीतर ही संभव है। उन्हें इयान ही नही।"[२]

वास्तव साथ जो फूहड मजाक किये जाते है, वे उन्हें कार्यस्थल पर हतोत्साहित करने वाले होते हैं। उमंग सोसायटी गाड़ी धोने काभ यह का काम शुरू करने पर हिजड़ा पूनम जोषी को भी यह सब झेलना पड़ता है किंतु विनोद उसका मनोबल बढ़ाता है कि उसे सिर्फ अपने काम पर ध्यान देना चाहिए। विनोद अपनी बिरादरी के हिजड़ो के नाच–गाने में कला देखता है और पूनम जोषी जैसे उम्दा हिजड़ा कलाकारों की इस कला को निखारने के प्रति प्रतिबद्ध है। वह पूनम की नृत्य कला को विकसित होने का अवसर मुहैया कराकर उसके लिए प्रशंसा और सम्मान चाहता है। स्थानीय विधायक के निजी सचिव भी यही मानता है कि पूनम कत्थक नृत्यांगना से कम नही है। वह भी विनोद की बात से सहमत होते हैं।

घर में रहते माँ उसे उभी दुनिया का सबसे बड़ा गणितज्ञ बनाने का सपना देखती थी। बैंगलोर से जाकर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गणितज्ञ शंकुतला जी से मिलवाने का उसका सपना था। घर में पड़े पढ़ाई के इस संस्कार को आत्मसात करने के कारण ही वह पूनम से कहता है, "पढ़ाई ही हमारी मुक्ति का रास्ता है। कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा गया है हमारे लिए.....।"[३] जो सपना कभी माँ ने उसके प्रसंग में देखा था, वहीं वह पूनम के प्रसंग में देखता है। वह चाहता है कि पूनम इतना तो पढ़ ही ले कि विश्व के कुछ श्रेष्ठ उपन्यास तो पढ़ हो सके ताकि उनके चरित्रों पर कभी बात की जा सके।

घर से बाहर निकाल देने पर जीवन की पाठषाला में ही यह पाठ उसने पढ़ा है कि स्वाभिमानी सौर आत्मनिर्भर होकर ही जीवन जीने को कई अर्थ है। विधायकके यहाँ नौकरी षुरू करने पर जरूरी सुविधाओं के नाम पर जब उसे एक अच्छा कीमती मोबाइल, लैपटाप और ऐसी ही कुछ अन्य चीजें दी जाती है, उन्हें वह इसी षर्त पर स्वीकार करता है कि इनकी राशी उसके

वेतन में से काटी जाएगी। यह उसे परिवार से मिला संस्कार है जो उसे परिवार के प्रति एक गहरे ममत्व से बांधे रखता है—जिसमें हर एक की चिंता का भाव निहित है।

विनोद उर्फ बिन्नी मध्य या उच्च मध्यवर्ग से अवश्य आता हे किंतु मध्यवर्गीय युवक की तरह खुदगर्ज नहीं हैं कि वह पढ़—लिखकर मात्र आत्मनिर्भर बनकर रह जाए, वह अपनी शेष हिजड़ा बिरादरी को कुएँ का मेंढक बने रहने को नहीं छोड़ सकता। वह मौका मिलने पर हिजड़ों के लिए सामाजिक—राजनीतिक आंदोलन छेड़ने से पीछे नहीं हटता। उपन्यास में लेखिका विनोद के माध्यम से ही हिजड़ों को संबोधित करती है कि वे हिजड़े होने के अभिशाप को अपनी नियति मानकर निराश न हो, बल्कि चीजों को बदलने की कोशिश करें। विनोद पढ़—लिखकर अपनी नारकीय हिजड़ा जिंदगी को सँवारने के रास्ते पर चलता है और साथ अपने जैसे जननांग दोषियों को सामान्य मनुष्य की जैसे जीवन जीने के लिए सचेत भी करता है।

लेखिका अपने इस उपन्यास के नायक विनोद के माध्यमसे पाठकों को यह संदेश देती है कि हिजड़ा होने को असामान्य जननांग विकृति के रूप में देखे जाने की अपेक्षा एक आम इंसान के ही रूप में देखा जाना चाहिए, “हम जो औरों की नजरों में गलीज और असामान्य है, लेकिन कितने आम और सामान्य है, ठीक उनकी ही तरह संवेदनशील और भावुक, असुरक्षा से घिरे।“[४] लेखिका ने उपन्यास में यही दर्शाया है कि हिजडा व्यक्ति भी आम इंसान की तरह ही प्यार का, पारिवारिक रिश्तों का भूखा होता है। लेखिका ने घर—परिवार से हिजड़े बच्चे के विछोह के दर्द को पूरी मानवीय संवेदना से उकेरा है। अपने घर—परिवार से जब जबरन बाहर धकेले जाते है तो उनके किशोर मन पर बहुत गहरा आघात पहुँचता है। लेखिका ने बिन्नी की माँ के मुख से उसके बड़े बेटे मोटा भाई से जो सवाल करवाया है, वह भी बिल्कुल वाजिब है, “क्या अनिष्ट किया है उसने (बिन्नी से) हमारा। प्रकृति ने जो इसके साथ नाइंसाफी की, उसमें उस मासूम का क्या दोष।“[४] उपन्यास का अंत किंचित सुखांत है और उम्मीद जगाता है कि विनोद जैसे जागरूक हिजडों की घर वापसी का अभियान रंग बार एक दिन रंग लाएगा।

अतत: यह उपन्यास हिजडों को भी मनुष्य मानने और उनके प्रति सहज मानवीय संवेदना रखने का संदेश देता है। इसी के साथ लेखिका ने हिजड़ा बिरादरी से भी उसकी नकारात्यता प्रतिक्रियावादी मानसिकता और कुप्रथाओं को लेकर आत्मचिंतन का आग्रह किया है। आज के उत्तर आधुनिक समय में यह उपन्यास नायकत्व की चली आई पूंसवादी प्रकृति से विचनन भी दर्शाता है। लेकिन. यह ध्यातव्य है कि हिजडों पर लिखे गए अन्य उपन्यासों में जहाँ स्त्री हिजडों पर ही उपन्यासकारों की लेखनी केंद्रित रही है, वही त्यारे इस उपन्यास का नायक विनोद हिजड़ा होने पर भी स्त्री हिजड़ा नही है, वह एक पुरुष हिजडे के रूप में दर्शकों से मुखातिब होता है।

संदर्भ :—

१) चित्रा मुदगल, पोस्ट बॉक्स नं. २०३ नाला सपारा. पृ. ५०
२) वही — पृ. ८७
३) वही — पृ.११०
४) वहीं — पृ. ८३
५) वही —पृ. २४